प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 56 - B * DEC 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Dec. 01.mp3	37	⊕	ओंकार भाग १		भ० नारायण से सर्वप्रथम **ओंकार की उत्पत्ति** हुई इसने ४रूप **'परा पश्यन्ति मध्यमा बैखरी'** धारण कर लिये । ओंकार का सम्पूर्ण स्वर व्यंजन, व्याकरण एवं नाम-रूप, ब्रह्मा विष्णु महेश, ३ अवस्थाओं, ३ शरीर में विस्तार । यह **भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम** है ।	⊕
2	Dec. 02.mp3	26	⊕	⊕	⊕	**भगवान राम और सीता जगत के माता पिता हैं** अतः ये संसार सियाराम से भिन्न नहीं है उनका ही स्वरूप है, संतान सदैव मातापिता स्वरूप ही होती है । **कारण से भिन्न कार्य देखने में नहीं आता** । जड़ शरीर सीता हैं व उनमें रहने वाली चेतन जीवात्मा राम हैं । दृश्यमान शरीर ही जन्मते मरते हैं जीवात्मा नहीं, द्रष्टा जीवात्मा अमर अविनाशी व्यापक ब्रह्म राम हैं ।	मुख्य एवं विशेष
3	Dec. 03.mp3	38	⊕	⊕	⊕	**ये संसार अधिष्ठान ब्रह्म में माया से बिना सामग्री के भया है अतः मिथ्या है**, माया नाम अज्ञान-अविद्या का है, ये झूठा संसार अज्ञान से उत्पन्न होता है व हमारी आत्मा रूपी दर्पण में छाया चित्र के समान दिखाई पड़ता है, **हमारा आत्मा द्रष्टा भी हैं और दर्पण भी**, हमारा आत्मा सदा एक समान रहने वाला उदय-अस्त रहित परम् प्रकाशमय ज्ञानरूपी सूर्य है। मा-न होवे, या-दिखाई दे	मुख्य एवं विशेष
4	Dec. 04.mp3	35	⊕	⊕	भाग १	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था** नानात्व कुछ न था, रज्जु में सर्प की भॉति ब्रह्म में माया स्वतः ही प्रकट हो गयी । चेतन पुरुष से जड़ झूठी अज्ञान रूपा छाया उत्पन्न होती है फिर उसी में विलीन हो जाती है - नियमानुसार **मिथ्या की निवृत्ति सत्य में ही होती है**, जीव की जन्म-मरण यात्रा ब्रह्म में मिलने तक पूरी नहीं होती,'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरा'	विशेष ⊕
5	Dec. 05.mp3	28	⊕	⊕	भाग २	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था** नानात्व कुछ न था, विद्या-अविद्या माया में पड़े ब्रह्म के प्रतिबिम्ब से क्रमशः सर्वज्ञ ईश्वर व अल्पज्ञ जीव हुआ, ईश्वर नित्य मुक्त है, ईश्वर की भक्ति करने पर **ईश्वर जीव को 'तत्-त्वम'** पद से **'ब्रह्म, ईश्वर** एवं **जीव'** का स्वरूप बताता है, तत् = ईश्वर, त्वम् = जीव, असि = जीव ईश्वर की एकता । जीव ईश्वर में अधिष्ठान स०ब्रह्म परम सत्य है विद्या-अविद्या माया व इनमें पड़े ब्रह्म के प्रतिबिम्ब झूठे होते हैं **अतः जीव ईश्वर का सच्चा स्वरूप ब्रह्म है ।**	विशेष ⊕
6	Dec. 06.mp3	36	⊕	⊕	भाग ३	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था** नानात्व कुछ न था, रज्जु में सर्प की भॉति ब्रह्म में माया स्वतः ही प्रकट हो गयी, माया ने विद्या-अविद्या का रूप धारण किया फिर उनमें पड़े ब्रह्म के प्रतिबिम्ब से क्रमशः सर्वज्ञ ईश्वर व अल्पज्ञ जीव हुआ । ईश्वर नित्य मुक्त है व **जीव भी ईश्वर की भक्ति करके ईश्वर की कृपा से अपना स्वरूप जानकर स्वयं भी मुक्त हो जाता है ।**	मुख्य ⊕
7	Dec. 07.mp3	43	⊕	ओंकार भाग २		संसार के सभी स्वर-व्यंजन ओंकार का ही विस्तार हैं जिनसे सब नामरूप बनते हैं, संसार के सभी नामरूप ओम् ने धारण किये हैं अतः **संसार में ओंकार के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।** संक्षेप में ओम् ने ३गुण ३देव ३अवस्थाऐं ३वेद ३शरीर ३काल का रूप धर लिया, सारा **दृश्य ओंकार है** ये जड़ है व इसे ज्ञान नहीं है इन सब में बैठकर **देखने वाला साक्षात परमब्रह्म परमात्मा है**	⊕
8	Dec. 08.mp3	30	⊕	⊕		जीव के कल्याण के साधन ४ **कृपाऐं** हैं ::१ ईश्वर २ वेद ३ गुरु ४ आत्म, ४खानि :-उद्भिज स्वेदज अण्डज पिण्डज + वानर ८४ लाख योनियॉं :: २०लाख **उद्भिज**, २०ला० **स्वेदज**, १०ला० **अण्डज**, ३०ला० **पिण्डज**+४ला० **वानर**, **मनुष्य देह ईश्वर कृपा**	
9	Dec. 09.mp3	51	⊕	⊕		अथर्ववेद-तैत्रीय उ०:: सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था,**ब्रह्म** से **आकाश** से-**वायु** से-**अग्नि** से-**जल** से-**पृथ्वी** से-**औषधि** से-**अन्न** से-**रेत** से-**पुरुष** । पंचभूतों के पंचीकरण से २५ तत्व हो जाते हैं जिनका सामूहिक नाम शरीर है । पंचभूतकृत **स्थूल व सूक्ष्म देह** एवं 'स्वरूप-अज्ञानरूप' **कारण शरीर की सविस्तार रचना , ३नों अवस्था तथा पंचकोष निरूपण**	
10	Dec.10.mp3	33	⊕	⊕	भाग ४	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था**, रज्जु में सर्प की भॉति ब्रह्म में माया स्वतः ही प्रकट हो गयी, माया ने विद्या-अविद्या का रूप धारण किया फिर उनमें पड़े ब्रह्म के प्रतिबिम्ब से क्रमशः सर्वज्ञ ईश्वर व अल्पज्ञ जीव हुआ । ईश्वर नित्य मुक्त है व जीव भी ईश्वर की भक्ति करके ईश्वर की कृपा से अपना स्वरूप जानकर स्वयं भी मुक्त हो जाता है, **राम सच्चिदानंद ब्रह्म हैं व सीताजी छायारूप माया हैं** जो जगत की उत्पत्ति पालन संहार करती हैं, **राम अंश जीव द्रष्टा है व दृश्यमान देह सीता ने बनाये हैं**	⊕
11	Dec.11.mp3	36	⊕	⊕	भाग ५	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था**, रज्जु में सर्प की भॉति ब्रह्म में माया छाया के समान स्वतः ही प्रकट हो गयी ।**राम सत्-चित्-आनंद से पूर्ण हैं** राम की महामाया शक्ति सीताजी जगत की उत्पत्ति पालन संहार करती हैं **असत्-जड़-दुःख रूप शरीर सीता का स्वरूप हैं** । द्रष्टा को राम व दृश्य को सीता कहते हैं अतः **यह संसार सीताराम का ही स्वरूप है** ३सरा कुछ नहीं है ।	⊕
12	Dec.12.mp3	39	⊕	⊕	भाग ६	**सीताराम जगत के मातापिता हैं** अतः संतान होने से **जगत उनका ही स्वरूप है।** सब शरीर माया-सीता-प्रकृति उत्पन्न करती है जो जड़ हैं । **सभी कर्म प्रकृति में हैं, द्रष्टा साक्षी राम अकर्म तत्व हैं** । भगवान ने माया से ब्रह्माण्ड की रचना की और वह स्वयं ही जीवात्मा के रूप में सभी शरीरों में बैठ कर देख रहे हैं। जीवात्मा का जन्म नहीं होता केवल शरीर ही जन्मते मरते हैं ।	⊕
13	Dec.13.mp3	36	⊕	⊕	⊕	**पैंग्लोपनिषद उ०/वाराह उ०/योगवाशिष्ठ** **:: ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ::** १ शुभेच्छा २ विचारणा ३ तनुमानसी ४ सत्वापत्ति ५ असन शक्ति ६ पदार्थाभावनी ७ तुरीयगाह। **१ शुभेच्छा** भूमिका : विवेक वैराग्य मुमुक्षता षट्कसंपदा-शम दम तितीक्षा उपरति श्रद्धा समाधान **२ विचारणा** : श्रोत्तीय ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरणागति + गुरु द्वारा ब्रह्म स्वरूप 'सच्चि०' का उपदेश='श्रवणं' **३ तनुमानसी** : 'मनन निधिध्यासन' **४ सत्वापत्ति** : सत्व प्राप्ति **५ असनशक्ति** : विषयासक्ति नाश **६ पदार्थाभावनी** : गाढ़ निद्रा **७ तुरीयगाह** : प्रगाढ़ निद्रा	विशेष ⊕
14	Dec.14.mp3	24	⊕	ओंकार भाग ३		**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था**, भ० की इच्छा से सर्वप्रथम ओंकार प्रकट हुआ जिसके ४रूप हुए -परा पश्यन्ति मध्यमा बैखरी व ओंकार से सारे स्वर-व्यंजन प्रकट हुए जिनसे सभी नामरूप 'स्त्री पुरुष पश पुक्षी आदि' उत्पन्न हो गये । चतुर दुभाषिये की भॉति ओंकार भग० के निनि० व ससा० दोनों स्वरूप को बतलाता है । **अंत में ओंकार पुनः ब्रह्म में ही लीन हो जाता है ।**	⊕
15	Dec.15.mp3	41	⊕	⊕	भाग ७	**भ० नारायण ने प्रथम जीव ब्रह्मा** को शोक-मोह निवारण हेतु **विज्ञान सहित ज्ञान का का उपदेश** दिया और वे ब्रह्म का स्वरूप जानकर मुक्त हो गये । हे ब्रह्मन, **सृष्टि के आदि में एक मैं ही था** तब सत्/जा० असत्/स्व० व इनसे परे/सु० भी नहीं थे पर तब भी मैं था । जो कुछ तुम देख रहे हो वह भी मैं ही हूॅ और **जब जा०स्व०सु० नही होंगे तब भी मैं ही रहूॅंगा**, **पूर्ण मिदं---**	मुख्य एवं विशेष
16	Dec.16.mp3	32	⊕	⊕	भाग ८	**सृष्टि के आदि में भगवान से** पुरुष से छाया के समान **अव्यक्त/प्रकृति का प्रादुर्भाव हुआ**, जैसे अग्नि की अव्यक्त शक्ति काष्ठ कोयले में प्रकट होने पर प्रकाश एवं उष्णता देती है वैसे ही **अकर्म भगवान की अनादि अविद्या परा अव्यक्त शक्ति माया क्षण मात्र में सारा ब्रह्माण्ड रच देती है** । माया सत्य ब्रह्म को छिपा कर झूठे जगत को दिखा देती है, **'ब्र० सत्यं जगत मिथ्या जीवौ...**	⊕
17	Dec.17.mp3	33	⊕	⊕		अर्जुन! **सृष्टि के आदि में जो ज्ञान मैंने सूर्य को** फिर उससे **मनु, इक्षवाकु** तथा परम्परागत **राजऋषियों** ने पाया वही योग मैं तुझे सुनाता हूॅ । मै सर्वज्ञ ईश्वर अजन्मा अविनाशी हूॅ किन्तु अपनी माया से साधुओं की रक्षा एवं दुष्ट-दलन हेतु **अवतार** लेता हूॅ ।	टि० देखें
18	Dec.18.mp3	32	⊕	⊕	⊕	**ब्रह्म ज्ञान की अध्यारोप-अपवाद प्रक्रिया** :: तटस्थ या उपलक्षण= एकदेशीय कदाचित व्यावर्तक :: ये जगत जिससे उत्पन्न होता है जिसमें रहता व विलीन होता है वह ब्रह्म है :: स्वरूप लक्षण=सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म । **अयं आत्मा ब्रह्म-सो अयं आत्मा - तत्वमसि,** सच्चि० सिन्धु सत्य है नामरूप जगत तरंगें हैं किन्तु तरंगों का वास्तविक स्वरूप तो जल ही है अतः बस एक ब्र०ही है	V. Imp
19	Dec.19.mp3	47	⊕	⊕	भा ९	**सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था** नानात्व कुछ न था, रज्जु में सर्प की भॉति ब्रह्म में माया स्वतः ही प्रकट हो गयी, मंद अंधकार में मन की भावनानुसार भ्रम होजाता है,**'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखीं तिन तैसी'**, पूतना कंस कृष्ण शेर का दृ०	
20	Dec.20.mp3	30	⊕	कैप्सूल जीव की ७ अवस्थाऐं		वेद में ब्रह्म के ४ स्वरूप :: ब्रह्म माया ईश्वर जीव :: शुद्ध ब्रह्म = **महाकाश**, विद्यामाया में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब-**मेघाकाश** = ईश्वर, **घटाकाश** = कूटस्थ ब्रह्म, अविद्यामाया में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब-**जलाकाश** = चिदाभास/जीव :: बन्ध-मोक्ष चिदाभास को ही होता है, चिदाभास की ७ अवस्थाऐं :: १ अज्ञान २ आवरण ३ विक्षेप ४ परोक्षज्ञान ५ अपरोक्षज्ञान ६ दुःख निवृत्ति ७ परम् हर्षानंद प्राप्ति	⊕

21	Dec.21.mp3	39				वेद **'कर्म भक्ति ज्ञान'** त्रिकाण्डमय है इनका क्रम समुच्चय है इसे ही कक्षा-सोपान-पड़ाव क्रम भी कहते हैं, अर्जुन **'कर्म'** एवं **'सत् रज तम'** ३गुणों के अनुसार मैं माया से **४वर्णों की सृष्टि** करता हूँ पर वास्तव में मैं अकर्ता एवं अव्यय हूँ, **४वर्णों के कर्म निरू०**	१
22	Dec.22mp3	34				**'गुणकर्म'** के अनुसार विभाग कर मैं माया से **चतुर्वर्ण सृष्टि** करता हूँ पर वास्तव में मैं अकर्ता एवं अविनाशी हूँ, **४वर्णों के कर्म निरूपण** ब्राह्मण शम दम तप शौच आर्जवम् ज्ञान विज्ञान/ब्र०ज्ञान क्षत्रिय शौर्य तेज दाक्ष्यं धैर्य दुष्ट-दलन दानं राजाभाव वैश्य कृषि शूद्र ३नों अग्रजनों की सेवा, शौच ::: स्नान से देह, सत्य से मन, तप से अन्तःकरण व ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है	२
23	Dec.23.mp3	33		भाग १८		**सृष्टि के आदि में ब्रह्म में इच्छा का प्रादुर्भाव हुआ** कि मैं एक से अनेक हो जाउँ और **'पुरुष में छाया के समान'** ब्र० अनेक रूप में प्रकट हो गया, जिससे जा०स्व०सु० उत्पन्न होते जिसमें जीते व लय हो जाते हैं वह ब्रह्म है अंत में ब्र०ही शेष रहता है, इसे अध्यारोप-अपवाद कहते हैं ब्र०तत्त्व को समझाने के लिये सृष्टि की कल्पना करदी है, माया छाया है **हमारा वास्तविक स्वरूप ब्र०है**	
24	Dec.24.mp3	36				**गीता २/१६ : सत् असत् २ ही तत्त्व हैं,** असत् का कभी भाव तथा **सत्** का कभी अभाव नहीं है । अनंत अखंड ज्ञान को **चिद्** व अनादि अनंत आनंद को **आनंदसिन्धु** कहते हैं, यह **'सच्चिदानंद' ब्रह्म का स्वरूप है** । दिखाई पड़ने वाला जा०स्व०सु० अथवा दृश्यमान जगत प्रकृति यानि माया है यह असत् जड़ दुःखरूप हैं । **द्रष्टा साक्षी सच्चिदानंद ब्रह्म ही हमारा तुम्हारा स्वरूप है ।**	विशेष
25	Dec.25.mp3	26				**भ०राम और सीता जगत के मातापिता हैं,** राम विष्णु व सीता लक्ष्मी की अवतार हैं, जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार सीता करती है राम तो निमित्त मात्र हैं, राम की सत्ता से सीता स्वयं ही जगत का रूप धर लेती हैं, **हम ज्ञान स्वरूप हैं निद्रा सीता माया है**	
26	Dec.26.mp3	39		गीता 2/16 उपनिषद		अर्जुन **सत् और असत् २ वस्तु हैं ।** असत् कभी है नहीं जैसे स्वप्न जो दीखता तो है पर जागने पर नहीं रहता ऐसे ही जागृत स्वप्न में झूठा हो गया, सुषुप्ति में दोनों लीन हो जाते हैं और समाधि में तो ३नों नहीं रहते अतः ३नों **असत्** हैं परन्तु इन ३नों को देखने वाला **सत्** है जो सदैव रहता है दृष्टान्त=लक्ष्मण-परशुराम संवाद । 'जा० और स्व०' बस इतना ही संसार है निद्रा में महाप्रलय हो जाती है । अर्जुन **हमारा तुम्हारा स्वरूप तीनों अवस्थाओं को देखने वाला है द्रष्टा साक्षी सच्चिदानंद ब्रह्म है।**	विशेष
27	Dec.27.mp3	32				**भ०राम और सीता जगत के मातापिता हैं,**जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार सीताजी करती हैं, जगदाधार द्रष्टा साक्षी राम तो निमित्त मात्र हैं और सीता राम की महामाया शक्ति **'प्रकृति'** हैं। **सीताजी द्वारा भ० राम का निनि० स्वरूप निरूपण :: रामं विद्धि परम्ब्रह्मम..**	
28	Dec.28.mp3	24				**गीता २/१६-१८:सत् असत् २ तत्त्व हैं,** सदा रहने वाला सत् व आने जाने वाला असत् है, **सत्** हमारा तुम्हारा सच्चि० स्वरूप अविनाशी द्रष्टा साक्षी आत्मा है, ये शरीर मन बुद्धि प्राण जन्मने मरने वाले **असत्** जड़ दुःखरूप है जिनसे हम सदैव असंग हैं	विशेष
29	Dec.29.mp3	29				**भगवान राम का निनि० स्वरूप ::** राम प्रकृति से परे अनादि अनंत सच्चिदानंद ब्रह्म हैं। संसार यानि नामरूप उपाधि ही जन्मते-मरते हैं । **'राम'** निरुपाधिक एवं निर्मल शान्त निर्विकार मायातीत व्यापक **द्रष्टा साक्षी** हमारी तुम्हारी **अखंड आत्मा/परमात्मा हैं** ।	
30	Dec.30.mp3	38				**गीता २/१७-१८ :** अविनाशी आत्मा देखता है दिखाई नहीं देता और नाशवान शरीर दिखाई देते हैं पर देखते नहीं, आत्मा से सारा विश्व/कण कण व्याप्त है इसका विनाश करने में कोई समर्थ नहीं है, व्याख्या :: अर्जुनउवाच :::'कार्पण्यदोषोपहतः स्वभाव'	
31	Dec.31.mp3	26				**सीता जगत की माता व राम पिता हैं** अतः जगत सीताराम का ही स्वरूप हैक्यों कि जल तरंगें जलरूप ही होती हैं, राम सर्वत्र व्याप्त सच्चि० ब्रह्म हैं । सब शरीर सीता के अंश हैं व इन देहों में बैठा जीवात्मा ईश्वर-अंश रामरूप है वही हमारा स्वरूप है	
32	Dec.32.mp3	32				**अर्जुन हम दोनों नर-नारायण के अवतार हैं दोनों का वास्तविक स्वरूप ब्रह्म है,** ब्रह्म माया उपाधि से ईश्वर व अविद्या उपाधि से जीव कहलाता है, निद्रावस्था **कारण** व जा०स्व० **कार्य** हैं, ब्रह्म ही निद्राउपाधि से **ईश्वर** तथा जा०स्व०उपाधि से **जीव** कहलाता है पर दोनों उपाधि कल्पित हैं **गीता २/१८-२१ :** आत्मा न मरता है न किसी को मारता है शरीर ही जन्मते हैं अतः मरते हैं, आत्मा अजन्मा अकर्म नित्य सनातन और पुरातन है, जीवात्मा वस्त्रों की भाँति ही पुराने देह त्याग कर नये शरीर धारण करती है	Imp
33	Dec.33.mp3	32				**गीता २/२१-२३ :** अर्जुन नित्य अजन्मा अव्यय देही आत्मा अबध्य है केवल देह ही पुराने वस्त्रों की भाँति बदलते रहते हैं, आत्मा किसी शस्त्र से काटा या भिगोया सुखाया जलाया नहीं जा सकता, आत्मा आकाश के समान व्यापक अचल स्थाणु और नित्य है ।	
34	Dec.34.mp3	36				**सीता जगत की माता व राम पिता हैं** अतः जगत सीताराम का ही स्वरूप हैसीताजी द्वारा **राम का निनि० स्वरूप निरूपण ::रामं विद्धि परम्ब्रह्मम्..**राम अकर्म हैं, सीता द्वारा अपना स्व०निरू०:-३गुण-पंचभूतों से दृश्य जगत की उत्पत्ति पालन संहार मैं करती हूँ	
35	Dec.35.mp3	34				**आत्मा अनात्मा २ ही पदार्थ हैं,** आत्मा सच्चि० स्वरूप है अनात्मा असत्-जड़-दुःखरूप है, ईश्वर अंश होने से जीव भी अजन्मा अविनाशी अचल सनातन असंग द्रष्टा सच्चि० स्वरूप है सभी दृश्यमान शरीर मायाकृत हैं एवं असत्-जड़ व दुःख के भंडार हैं	
36	Dec.36.mp3	29				**सीताराम जगत के मातापिता हैं** अतः जगत सीताराम का ही स्वरूप है, मैं स्वयं अजन्मा अविनाशी निनि० परमात्मा हूँ, मैं अपनी माया/सीता से ही ईश्वर एवं जीव दोनों के शरीर धारण करता हूँ शरीर ही जन्मते मरते हैं, शरीर छाया के समान माया का और जीव मेरा अंश होने से मुझ ब्रह्म का ही स्वरूप है,**अज्ञान-जड़-दुःखरूप छाया दृश्य है जो द्रष्टा पुरुष/आत्मा से ही प्रकट होती है**	
37	Dec.37.mp3	42		माया और आत्म ज्ञान		**गीता २/२३-२५:**अर्जुन आत्मा को कोई काट गला सुखा जला नहीं सकता, **आत्मा अजन्मा अव्यय अमृत है,** देवता दैत्य मनुष्य सबके शरीर मेरी इच्छा के आधीन मेरी माया से बन जाते हैं,**आत्मा तो स्वयं ही सच्चि०स्वरूप है**उसमें असत् जड़ दुःखरूप माया है ही नहीं अतः कुछ भी प्राप्त/निवृत्त नहीं करना, **मेरे भक्तों को मेरी ३ प्रकार की जा०-स्व०-सु० कार्य-कारण माया नहीं व्यापती**	मुख्य विशेष
	Dec.38.mp3	29				**तैत्रीय उपनिषद :: सृष्टि के आदि में उस परम्ब्रह्म परमात्मा से,** हमारी आत्मा से सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ, उससे वायु, से अग्नि,से जल,से पृथ्वी,से औषधि, से अन्न, से रेत/वीर्य/बीज उत्पन्न हुआ, वीर्य अन्न की ७तवीं धातु है, गर्भोपनिषद में देह रचना	
38	Dec.39.mp3	29				**गीता २/३० : देह और देही २ तत्त्व हैं** जो दिखाई पड़े वह **देह** व उनें बैठकर देखने वाला **देही** है, सभी देह मेरी माया से बने हैं अतः असत हैंवे जन्मते-मरते हैं क्यों कि जन्मने वाला अवश्य ही मरता है,, देही जीवात्मा मेरा ही रूप है जो नित्य अबध्य और अजन्मा है अतः अमृत रूप है, पशु-पक्षी मनुष्य देवता आदि सभी के शरीरों में देखने वाला मै आत्मा/परमात्मा ही हूँ, **सृष्टि क्रम की अध्यास-अध्यारोप प्रक्रिया,** छायारूप जगत ईश्वर का ही ससा०रूप है-छाया पुरुष के ही आश्रित होती है, **ब्रह्म सत्यं जगत**	Imp
39	Dec.40.mp3	37				**पिता हमस्य...यजुरेव च ::** जगत का पिता मैं हूँ तथा माता धाता पितामह भी मैं हूँ, जानने योग्य परम् पवित्र ओंकार तथा उसका विस्तार 'वेद और संपूर्ण जगत' भी मैं ही हूँ जगत का निमित्तोपादान कारण मैं ही हूँ, अतः **भगवान से भिन्न कुछ भी नहीं है**	
	Dec.41.mp3	34				**गीता १३/१-२ :** ये शरीर **क्षेत्र** है व इसको जानना वाला तत्त्व **क्षेत्रज्ञ** है, ये क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ क्रमशः खेत और किसान तुल्य हैं, खेत जड़ हैं जो किसी को नहीं जानता परचेतन किसान इनको जानता है, सभी शरीर रूपी खेतों में जो कुछ भी 'शुभाशुभकर्म' बोया जाता है वही जमता और फलता है, इन खेतों में किसान के समान क्षेत्रज्ञ **मैं 'सच्चिदानंद' ही हूँ, +** संविस्तार ३नों शरीर रचना	